1 अभिज्ञान शाकुन्तलम् (04)

दुष्यन्त का चरित्र चित्रण । प्र॰1.

राजा दुष्यन्त 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का धीरोदात्त नायक है। वह कालिदास के नायकों में सर्वश्रेष्ठ स्थान का अधिकारी है। जितनी सावधानी और सतर्कता से नाटककार ने उसके चरित्र की अवतारणा की है, वह अन्य नायकों को प्राप्त नहीं हो सकी है।

दुष्यन्त राजा और प्रेमी, हृदयवादी और विवेकवादी दोनों रूपों में सँवारा गया है। प्रथम रूप में उसकी चित्तवृत्तियाँ स्वस्थ हैं; लोकविहित हैं। दूसरे रूप में उसकी मनोवृत्तियाँ सम्मोहित हैं, व्यक्तिनिष्ठ हैं। नाटककार ने इन दोनों रूपों को इस कौशल से मिला दिया है कि पहले का आस्वाद, प्रधान होते हुए भी, दूसरे को विलुप्त नहीं कर सका है, अपितु उसके मिश्रण से वह उसी भाँति और भी समृद्ध बन गया है जैसे दूध में चीनी स्वतः घुलकर, उसके आस्वाद को और भी बढ़ा देती है। दुष्यन्त का चरित्र दूध के समान निर्मल और स्वस्थ तत्वों से परिपूरित है। प्रणय ने उसमें प्रविष्ट होकर वह रूपान्तर उत्पन्न कर दिया है जो मानवता के मर्म को सीधे पकड़ता है, अधिशासित करता है।

दुष्यन्त इस नाटक में दो रूपों में चित्रित है। एक ओर जहाँ वह रसिक प्रेमी है वहीं दूसरी ओर आदर्श राजा भी है। परन्तु 'मालविकाग्निमित्र' के नायक अग्निमित्र की तरह ही दुष्यन्त दोहरे व्यक्तित्व का नायक है। यह चारित्रिक विशेषता ही दुष्यन्त को सजीवता और यथार्थता प्रदान करता है। नाटक के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अंक में इसकी भूमिका साधारण मानव की है। पाँचवें अंक में अपने परिचित चरित्र के विपरीत वह पूर्णतः राजा के रूप में प्रकट होता है — "स्वान्तः सुखाय" की जगह "सर्वजन हिताय" की मानसिकता के साथ। दुष्यन्त का इकाई रूप पूर्वार्द्ध और छठे-सातवें अंक के चरित्र जिसमें वह राजा के साथ-साथ साधारण मानव के रूप में जीता है, के बीच की कड़ी है। नीचे दुष्यन्त के विभिन्न गुणों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

(1) आकर्षक व्यक्तित्व — नाटक के प्रारंभ में दुष्यन्त से हमारा एक बहुकांक्षी युवक के रूप में परिचय होता है। उसकी आकृति भव्य, मनोहर तथा कोमल है। मन से वह पवित्र, सरस एवं

मृदु है। उसका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावशाली है। अपनी गंभीर, भव्य एवं तेजपूर्ण आकृति से वह सबको अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। उसके प्रथम दर्शन मात्र से शकुन्तला तपोवनविरोधी कामविकारपरवश हो जाती है। स्वयं प्रियंवदा ने उसकी गंभीर आकृति एवं मधुरवाणी की प्रशंसा की है —
"अनुसूये को न खल्वेष चतुरगंभीराकृतिश्चतुरं प्रियं लपन प्रभाववान् इव लक्ष्यते।"

वह अत्यन्त मृदुभाषी है। जब वह लड़कियों से विदा लेता है तो अपने कथन से उनको आकृष्ट कर लेता है — "दर्शनेनैव भवतीनां सम्भृतसत्कारोऽस्मि।"

2) वीरता — वह वीर तथा उत्साही है। मृगया से श्रमित उसके शरीर का जिस प्रकार सेनापति द्वारा वर्णन किया गया है वह उसके शारीरिक सुगठन, परिश्रमशीलता एवं बलिष्ठता का परिचायक है। उसकी वीरता का प्रयोग सद्कार्यों में होता है। वह अपनी शारीरिक शक्ति द्वारा तपोवन की रक्षा करता है। उसकी धनुष की प्रत्यंचा की टंकार मात्र से सभी विघ्न दूर हो जाते हैं।

3) विनयशीलता — वह वीर होते हुए भी अत्यन्त विनयी है। उसकी विनयशीलता आश्रम वासी मुनि कुमारों के प्रति शिष्ट व्यवहार में, अनुसूया एवं प्रियंवदा के वार्तालाप में तथा मातलि द्वारा प्रशंसित होने पर इन्द्र के प्रति किए गए सम्मान तथा कृतज्ञता सूचक शब्दों से परिलक्षित होती है — "अत्र खलु शतक्रतोरेव को हिमांसुल्यन"।

4) धर्मभीरुता — दुष्यन्त गंभीर प्रकृति का धर्म-भीरु राजा है। ज्योंहि उसे कण्व-शिष्यों के आगमन की सूचना मिलती है, तत्क्षण वह उनके स्वागत में बिना विश्राम किए चल देता है। इतना ही नहीं, लता वृक्षादि में यदि फल नहीं लगता तो वह इसे अपना अपराध समझता है। राज्य के जीवों के दुष्कर्मों का उत्तरदायी स्वयं को मानता है।

5) ऋषियों के प्रति श्रद्धा — ऋषि-मुनियों के प्रति उसके मन में असीम सम्मान एवं श्रद्धा का भाव है। आश्रम में प्रवेश करते ही उसके दर्शन से अपने को धन्य मानता है — "पुण्याश्रमदर्शनेन तावद् आत्मानं पुनीमहे।" वह आश्रम में अपने सभी वस्त्राभूषणों को उतारकर विनीत वेश में प्रवेश करता है — "विनीतवेशेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम।"

इससे उसकी आश्रम के प्रति भक्ति एवं पूज्य भावना प्रदर्शित होती है। आश्रमवासी एवं कण्व ऋषि के कल्याण की भावना उसके मन में सजग रहती है। जब शकुन्तला को लेकर आश्रमवासी उसके दरबार में जाते हैं तो वह सर्वप्रथम यही प्रश्न करता है — "अपि निर्विघ्न तपसो मुनयः।"

6) आदर्श प्रेमी — अपूर्व लावण्यमयी अनिन्द्य सुन्दरी शकुन्तला को देखकर वह आकृष्ट होता है, किन्तु उसके प्रति प्रेम-प्रदर्शित करने के पूर्व यह जान लेना चाहता है कि वह उसके विवाह के योग्य है या नहीं। यद्यपि उसके विवेक और अन्तर उसे अपने योग्य मानने को विवश करते हैं — असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा।

7) आत्मसंयमता — ~~शारीरिक [illegible] पुष्ट, [illegible], [illegible], [illegible] आदि [illegible] है। [illegible]~~। शकुन्तला का तिरस्कार करने पर शार्ङ्गरव उसपर कटूक्तियों से प्रहार करता है पर दुष्यन्त उसकी बातों को सहन कर कठोर आत्मसंयम का परिचय देता है। एक असाधारण रूपवती युवती उसे पत्नी रूप में मानने की प्रार्थना करती है और ऋषि भी उसके लिए तर्क उपस्थित करते हैं। फिर भी वह उसके प्रति नहीं झुकता। दूसरे की पत्नी का स्पर्श मात्र भी पाप समझता है "अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्।"

8) कलामर्मज्ञता — उसे हम ललित कलाओं का मर्मज्ञ एवं अनुरागी के रूप में पाते हैं। वह रानी हंसपदिका के गीत को सुनकर उसपर जो टिप्पणी करता है उससे उसकी कलाभिज्ञता की प्रतीति होती है — 'अहो रागपरिवाहिनी गीतिः।"

9) चित्रकारिता — वह चित्रकला में भी निपुण है। शकुन्तला के वियोग में अपने आश्रम की पृष्ठभूमि में जो उसका चित्रांकन किया है, उसमें उसके अंग-सौष्ठव के अतिरिक्त मानसिक भावों की भी अभिव्यक्ति हुई है।

10). आदर्श पति — षष्ठ अंक में शकुन्तला का चित्र देखते समय रानी वसुमती के आने का समाचार पाकर वह चित्र को छुपा देता है।

इसमें संदेह नहीं कि कालिदास के अन्य नाटकों के नायकों की भाँति दुष्यन्त भी बहुपत्नीक है। स्वाभाविक रूप से उसके अन्तःपुर में कुछ उसके प्रेम की पात्रा हैं तो कुछ उपेक्षिता भी। उपेक्षिता हंसपदिका उसे रसलोलुप मधुकर कहती है, परन्तु किसी के सौन्दर्य मात्र पर मोहित हो जाना जैसी मधुकर-वृत्ति उसमें नहीं है अन्यथा अनिंद्य सुन्दरी शकुन्तला का परित्याग संभव न था।

उच्च कोटि का शासक — दुष्यन्त उच्चकोटि का शासक है एवं उसमें कर्त्तव्यपरायणता, प्रजाप्रेम, लोभ का अभाव - ये तीन गुण विद्यमान हैं। प्रथम अंक में हाथियों का उपद्रव सुनते ही लड़कियों से विदा लेकर शीघ्र उसको दण्ड देने के लिए सन्नद्ध हो जाने एवं दो तपस्वियों द्वारा तपोवन की रक्षा के लिए बुलाए जाने पर उसके इस कथन में — "गच्छतां भवन्तौ, अहमनुपदमागत एव" कर्त्तव्यपरायणता झलकती है।

शकुन्तला के विरह ताप में दग्ध होने पर भी वह नित्य प्रति राज्य कार्य में भाग लेना तथा प्रतिदिन मंत्रियों के कार्यों का निरीक्षण किए बिना कोई आज्ञा प्रसारित न करना, उसके वास्तविक शासक होने के उदाहरण हैं।

मानवोचित दुर्बलताएँ — दुष्यन्त में स्वाभाविक मानवोचित दुर्बलताएँ भी हैं। मानव-चरित्र का महत्व उसके पतन तथा उत्थान में ही है। इसीलिए शकुन्तला को प्रथम बार देखकर उसका मानवोचित पतन हुआ। लुक-छिप कर व्यस्क तापस कन्याओं की विनोद-क्रीड़ा देखना, भेद छिपाने के लिए अपना अस्पष्ट मिथ्या परिचय देना, सकृद्दर्शन मात्र से मुनिकन्या को उपभोग योग्या नारी समझ लेना, माता की आज्ञा पर ध्यान न देना, विदूषक को छल से राजधानी भेज देना, बिना कण्व की आज्ञा के सरलस्वभावा शकुन्तला को बहका कर उसके साथ विवाह कर लेना और ऋषि के आने के पूर्व ही वहाँ से खिसक जाना आदि उसकी मानवोचित दुर्बलता के परिचायक हैं।

इसके चरित्र में जो मानवोचित दुर्बलताएँ हैं वे पश्चाताप की अग्नि में जलकर भस्म हो जाती हैं और उसका भव्य रूप कुन्दन की भाँति चमक उठता है।

इस प्रकार कालिदास ने दुष्यन्त के रूप में एक महान् पराक्रमी पर विनयी, प्रेमिल पर कर्त्तव्यपरायण, प्रजा-पालक पर आत्मदण्ड शासक, प्रभावशाली पर न्यायपरायण, वैभव सम्पन्न पर कष्ट सहिष्णु, वियोगदग्ध पर मातृ-प्रजा-भक्त, ललित कला प्रेमी, निरभिमानी, आदर्श प्रणयी राजा का प्रशस्त चित्र प्रस्तुत किया है।